लघु
संस्कृत व्याकरण

[छात्रों एवं संस्कृत के अनभिज्ञ जिज्ञासु-जन
के लिए सर्वाङ्गपूर्ण संस्कृत-व्याकरण]

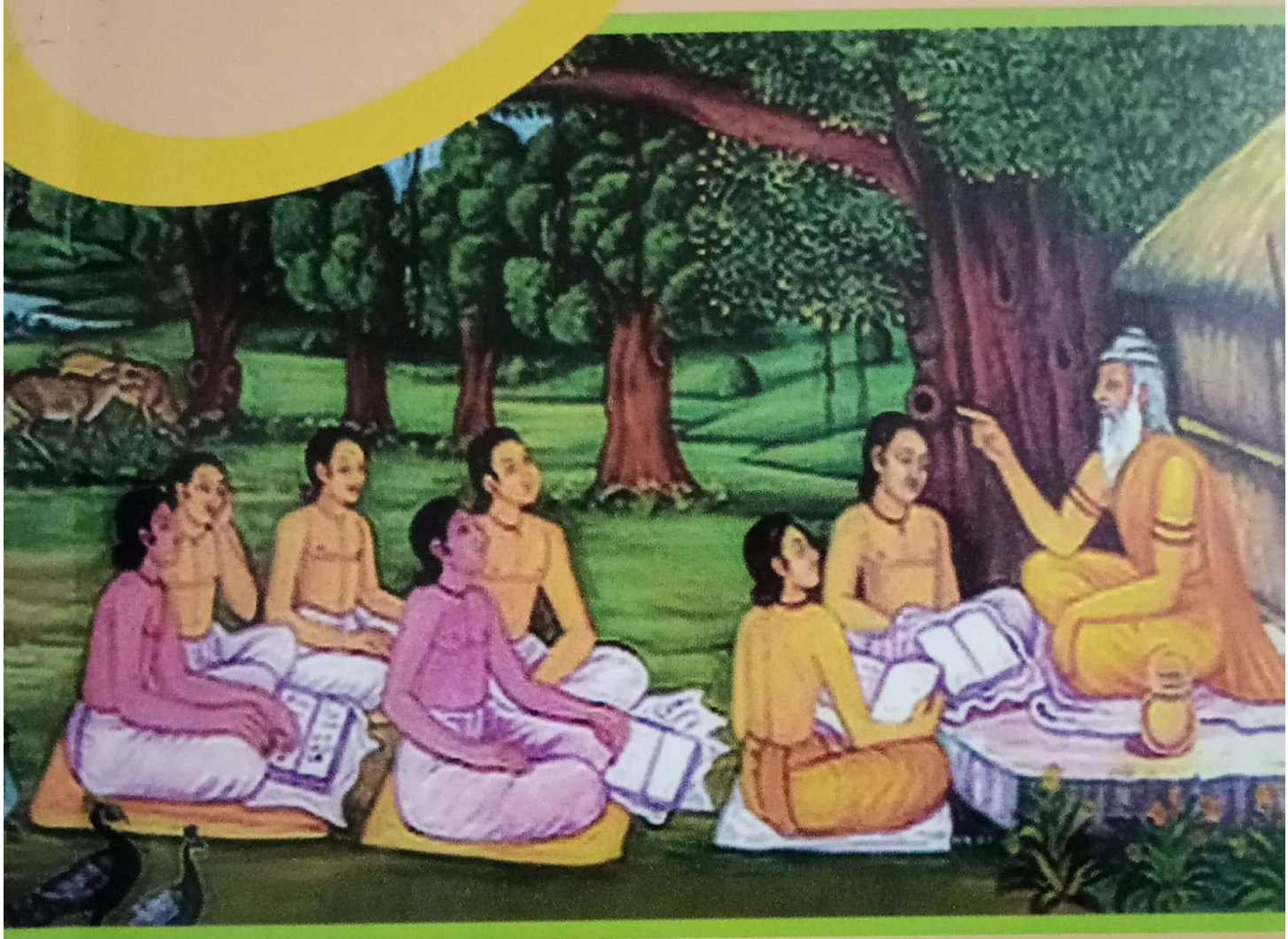

डॉ० ललित कुमार मण्डल

Scanned with CamScanner

प्रकाशक :

चन्दन पब्लिकेशंस

A-84 मोहन गार्डन,

नई दिल्ली-110059

दूरभाष : 9311154187, 9311254187

e-mail : chandanbooks@yahoo.com

लेखक :

डॉ० ललित कुमार मण्डल

असिस्टेण्ट प्रोफ़ेसर

बी०आर०ए० बिहार यूनिवर्सिटी, मुजफ्फरपुर, बिहार

B.A. [Hons.], M.A., M.Phil., Ph.D., U.G.C. (N.E.T.), B.Ed.

Mob. : 9868648828

e-mail : drlkmandal@gmail.com

संशोधित संस्करण : 2019

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

ISBN : 978-93-5156-965-7

टाईप सेटिंग :

एब्रो इंटरप्राइजिज

दिल्ली-110006

Scanned with CamScanner

विषय-सूची

समर्पण	iii	
प्राक्कथन	iv	
कृतज्ञताज्ञापन	vi	
विषय-सूची	vii	
सम्पूरक [क]	ix	
सम्पूरक [ख]	x	
१. 1. संस्कृत-वर्णमाला	१	[1]
२. 2. लिङ्ग, पुरुष एवं वचन	५	[5]
३. 3. कर्ता, कर्ता की पहचान, कर्ता की सारणी	८	[8]
४. 4. क्रिया-धातु, काल-लकार एवं 'क्रिया के रूप-पहचान-लकार'	१२	[12]
५. 5. प्रत्यय	१५	[15]
६. 6. कर्ता और प्रत्यय का मेल	२०	[20]
७. 7. धातुरूप एवं शब्दरूप क्या है?	२२	[22]
८. 8. लघु वाक्य-रचना [कर्ता एवं धातुरूप का मेल]	२४	[24]
९. 9. शब्दरूप एवम् उनके अर्थ जानने [करने] की विधि-	३९	[39]
[क] संज्ञा शब्द–देव [४६], फल [४७], लता [४८], मुनि [४८], नदी [५०], मति [५१], वारि [६२], साधु [५२], धेनु [५२], मधु [६१], वधू [५३], मातृ [५५], पितृ [५४], कर्तृ [५५], गुणिन् [५८], राजन् [५६], आत्मन् [५७], नामन् [६०], कर्मन् [६१], भगवत् [६३], जगत् [६४], मनस् [५९], विद्वस् [५९], सरित् [६४], आपद् [६५]		
[ख] सर्वनाम शब्द–किम्, तत्, एतत्, यत्, इदम्, सर्व, अदस्, भवत् [पुँ0], भवती [स्त्री0], युष्मद्, अस्मद्।	७७	[77]
[ग] शतृँ [अत्] प्रत्यय वाले शब्द	८५	[85]
[घ] मतुँप् [मत्] एवं क्तवतुँ [तवत्] प्रत्यय वाले शब्द	८६	[86]
[ङ] संख्यावाची शब्द-	८७	[87]
शेष अन्य शब्दों के रूप के लिए 'शब्दसूची' [पृष्ठ (ix) सम्पूरक 'क'] देखें		

Scanned with CamScanner

१०. 10. धातुरूप एवम् उनके अर्थ जानने [करने] की विधि–१०१ [101]
[क] **परस्मैपदी धातु**–√अस् [१०४], √कृ [१०५], √भू [भव्] [१०१], √पठ् [१०३], √दृश् [पश्य्] [१०७] √स्था [तिष्ठ्] [१०८], √गम् [गच्छ्] [१०६], √पा [पिब्] [१३०], √लिख् [१३०], √पत् [१३५], √वद् [१३४], √वस् [१३६], √दा [१०९], √हस् [१३५], √चिन्त् [१३५], √कथ् [२६३] आदि
[ख] **आत्मनेपदी धातु**–√सेव् [१०५], √रुच् [रोच्] [१४६], √वृत् [वर्त्] [१४७], √वृध् [वर्ध्] [१४७], √मुद् [१६१], √विद् [विद्य्] [१४७] आदि
शेष अन्य परस्मैपदी और आत्मनेपदी धातुओं के रूप के लिए 'धातुसूची' [पृष्ठ (x) सम्पूरक 'ख'] देखें।
११. 11. उपसर्गयुक्त धातु १६८ [168]
१२. 12. प्रेरणार्थक 'णिच्'-प्रत्ययान्त धातु १७८ [178]
१३. 13. अव्यय शब्द १८५ [185]
१४. 14. स्त्री प्रत्यय १९७ [197]
१५. 15. विशेष्य एवं विशेषण २०२ [202]
१६. 16. 'क्त्वा', 'तुमुँन्', 'क्त', 'तव्यत्' आदि 'कृत्'-प्रत्यय २१७ [217]
१७. 17. तद्धित-प्रत्यय २२३ [223]
१८. 18. घटिकायन्त्र [घड़ी] एवं कालज्ञापन २२७ [227]
१९. 19. कारक-विभक्ति एवम् उपपद-विभक्ति २३० [230]
२०. 20. वाच्य [कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य] २५३ [253]
२१. 21. सन्धि २७२ [272]
२२. 22. समास २९२ [292]
२३. 23. दीर्घ वाक्य-संरचना ३०८ [308]
२४. 24. पद-परिचय के नियम ३०९ [309]
२५. 25. अन्वय करने की विधि ३१२ [312]
२६. 26. प्रश्न-निर्माण करने की विधि ३१४ [314]
२७. 27. पत्र-लेखन ३१६ [316]
२८. 28. अपठित गद्यांश के उत्तर लिखने की विधि ३१९ [319]
२९. 29. प्रश्न-पत्र एवम् उत्तर ३२७ [327]

Scanned with CamScanner

१
संस्कृत-वर्णमाला

अपने मन के भावों अथवा विचारों को एक-दूसरे के समक्ष प्रकट करने या विचारों के आदान-प्रदान करने का सबसे अधिक प्रभावशाली और सशक्त साधन होता है–**'भाषा'**। 'भाषा' लिखित एवम् मौखिक दोनों ही रूपों में प्रयुक्त होती है। 'भाषा' के तीन मुख्य अङ्ग [अवयव] होते हैं–**'वाक्य'**, **'शब्द'** एवं **'वर्ण'** [अक्षर]। 'वाक्य[१]' एक से अधिक शब्दों के मेल से बनता है [जैसे कि 'राम पढ़ता है']; 'शब्द' एक से अधिक 'वर्णों [अक्षरों]' के मेल से बनता है [जैसे कि 'र् आ म् अ्' इन चारों वर्णों के मेल से 'राम' शब्द बनता है]। इस प्रकार 'वर्ण' भाषा की सबसे छोटी एवं महत्त्वपूर्ण इकाई होता है। **'वर्ण[२]'** तीन प्रकार के हैं–

[क] स्वर-वर्ण [अच्[३]]→अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ

[ख] व्यञ्जन-वर्ण [हल्[४]]→क् ख् ग् घ् ङ् [कवर्ग] –कुँ

---

१. 'वाक्य' के लिए कम-से-कम एक 'कर्ता' और एक 'क्रिया' आवश्यक होता है; केवल 'राम' या केवल 'पढ़ता है' वाक्य नहीं कहला सकता है; कर्ता और क्रिया का साथ-साथ होना जरूरी है। 'वाक्य' वस्तुतः योग्यता, आकाङ्क्षा और आसत्ति से युक्त शब्द-समूह होता है–'वाक्यं स्याद् योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः'। [साहित्यदर्पण]

२. इन वर्णों को पाणिनि ने १४ माहेश्वर-सूत्रों [प्रत्याहार-सूत्रों] में अभिव्यक्त किया है- १. अइउण्, २. ऋऌक्, ३. एओङ्, ४. एऐच् ५. हयवरट् ६. लँण् ७. ञमङणनम् ८. झभञ् ९. घढधष् १०. जबगडदश् ११. खफछठथचटतव् १२. कपय् १३. शषसर् १४. हल्।

३. इन १४ प्रत्याहार-सूत्रों में पहले सूत्र '१ अइउण्' के 'अ' और चौथे सूत्र '४ ऐऐच्' के 'च्' को लेकर यह प्रत्याहार बना है, जिसके अन्तर्गत सभी 'स्वर वर्ण' आ जाते हैं।

४. पाँचवें प्रत्याहार सूत्र के 'ह' और चौदहवें सूत्र के 'ल्' को लेकर यह प्रत्याहार बना है, जिसके अन्तर्गत सभी 'व्यञ्जन वर्ण' आ जाते हैं।

Scanned with CamScanner

च् छ् ज् झ् ञ्	[चवर्ग]	-	चुँ
ट् ठ् ड् ढ् ण्	[टवर्ग]	-	टुँ
त् थ् द् ध् न्	[तवर्ग]	-	तुँ
प् फ् ब् भ् म्	[पवर्ग]	-	पुँ
य् र् ल् व्	[अन्तःस्थ]		
श् ष् स् ह	[ऊष्मा]	-	

[ग] **अयोगवाह-वर्ण→** अनुनासिक [ँ], अनुस्वार [ं], विसर्ग [:]

संयुक्त व्यञ्जन वर्ण→

क्ष [क् + ष्]	श्र [श् + र्]		
ङ्क [ङ् + क्]	ङ्ग [ङ् + ग्]	त्र [त् + र्]	ह्र [ह् + र्]
ह्य [ह् + य्]		ज्ञ [ज् + ञ्]	ह्न [ह् + न्]
ह्म [ह् + म्]		द्य [द् + य्]	द्ध [द् + ध्]

संयुक्त व्यञ्जन-वर्ण इसी तरह एक से अधिक व्यञ्जन वर्ण को जोड़कर बनाये जाते हैं।

जिस प्रकार मनुष्यों के अपने-अपने नाम होते हैं, उसी प्रकार इन वर्णों के भी अपने-अपने नाम हैं। वर्णों का नाम उच्चारण-स्थान के आधार पर रखा गया है–

	वर्ण			उच्चारण स्थान
कण्ठ्य -	अ आ (अ)	क् ख् ग् घ् ङ् (कुँ)	ह् विसर्ग [:][1]	– कण्ठ
			ह विसर्जनीय	
तालव्य -	इ ई (इ)	च् छ् ज् झ् ञ् (चुँ)	य् श्[2]	– तालु
			य श	
ओष्ठ्य -	उ ऊ (उ)	प् फ् ब् भ् म् (पुँ)	उपध्मानीय [ऽप् ऽफ्][3]	– ओष्ठ
			उपध्मानीय	

---

१. अकुँहविसर्जनीयानां कण्ठः।

२. इचुँयशानां तालु।

३. उपूँपध्मानीयानामोष्ठौ।

Scanned with CamScanner

मूर्धन्य - ऋ ॠ ट् ठ् ड् ढ् ण् र् ष्[1] – मूर्धा

ऋ टुँ र ष

दन्त्य - लृ त् थ् द् ध् न् ल् स्[2] – दन्त

लृ तुँ ल स

कण्ठतालव्य- ए ऐ[3] – कण्ठतालु
कण्ठोष्ठ्य - ओ औ[4] – कण्ठोष्ठ
जिह्वमूलीय - जिह्वामूलीय [≍क् ≍ख्][5] – जिह्वामूल
नासिक्य - ङ् ञ् ण् न् म् अनुस्वार [-ं][6] – नासिका [नाक]
दन्तोष्ठ्य - व्[7] – दन्तोष्ठ
अनुनासिक्य - चन्द्रबिन्दु [-ँ][8] – अनुनासिक

विशेष रूप से स्मरण रखने योग्य वर्णों के नाम हैं–

ण् - मूर्धन्य		श् - तालव्य	
न् - दन्त्य		ष् - मूर्धन्य	
		स् - दन्त्य	

आकार के आधार पर स्वर-वर्णों को निम्नलिखित रूप में जाना जाता है–

अ, इ, उ, ऋ, लृ	-	ह्रस्व स्वर
आ, ई, ऊ, ॠ	-	दीर्घ स्वर
ए, ऐ, ओ, औ	-	दीर्घ स्वर [संयुक्त स्वर]

---

१. ऋटुँरषाणां मूर्धा।
२. लृतुँलसानां दन्ताः।
३. एदैतोः कण्ठतालु।
४. ओदौतोः कण्ठोष्ठम्।
५. जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्।
६. ञमङणनानां नासिका च, नासिकाऽनुस्वारस्य ।
७. वकारस्य दन्तोष्ठम् ।
८. मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः।

'अनुस्वार' [ं], 'अनुनासिक' [ँ] एवं 'विसर्ग' [:] हमेशा स्वर-वर्ण पर ही आश्रित होते हैं, व्यञ्जन-वर्ण पर नहीं–

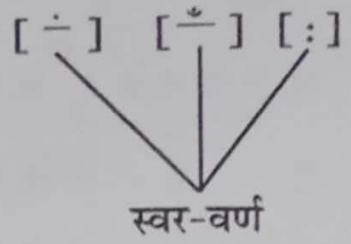

[ं] - पंख [प् + अं + ख् + अ]

[ँ] - कहाँ [क् + अ + ह् + आँ]

[:] - दुःख [द् + उः + ख् + अ]

स्वर-वर्ण		मात्रा
अ	-	
आ	-	ा
इ	-	ि
ई	-	ी
उ	-	ु
ऊ	-	ू
ऋ	-	ृ
ॠ	-	ॄ
ऌ	-	ॢ
ए	-	े
ऐ	-	ै
ओ	-	ो
औ	-	ौ

मात्रा के आधार पर स्वर-वर्ण दो प्रकार के हैं- १. मात्रा वाला और २. बिना मात्रा वाला अर्थात् 'अ'। जब व्यञ्जन-वर्ण में बिना मात्रा वाला स्वर अर्थात् 'अ' जोड़ा जाता है, तब केवल एक परिवर्तन होता है कि व्यञ्जन वर्ण का हलन्त चिह्न हट जाता है और जब मात्रा वाला स्वर जोड़ा जाता है, तब दो परिवर्तन होते हैं- १. हलन्त चिह्न हट जाता है और २. उस स्वर की मात्रा जुड़ जाती है।

→ वेद में वर्ण	शब्द
प्+उ+स्+त्+अ+क्+अ+म्	- पुस्तकम्
ग्+र्+अ+न्+थ्+अ+म्	- ग्रन्थम्
द्+अ+र्+श्+अ+न्+ई+य्+अ	- दर्शनीय
द्+ए+व्+ए+न्+द्+र्+अ+:	- देवेन्द्रः

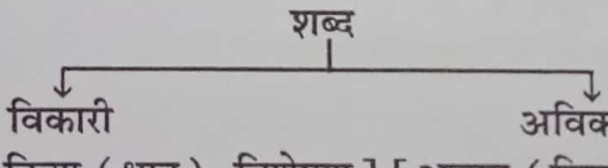

[संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया (धातु), विशेषण] [अव्यय (क्रिया-विशेषण)]

Scanned with CamScanner

२
लिङ्ग, पुरुष एवं वचन

लिङ्ग

'लिङ्ग' शब्द का अर्थ होता है–चिह्न, लक्षण, पहचान अथवा जाति। संस्कृत में तीन प्रकार के **लिङ्ग** हैं–

[क] पुम् + लिङ्ग → **पुँल्लिङ्ग** – जिससे 'पुरुष' [लड़का] जाति का बोध [ज्ञान] हो, उसे **'पुँल्लिङ्ग'** कहा जाता है; जैसे–छात्र, बालक, राम, मुनि, विद्यालय, काक, व्याघ्र आदि।

↓ ↓

पुरुष जाति

[लड़का]

[ख] स्त्री + लिङ्ग → **स्त्रीलिङ्ग** – जिससे 'स्त्री' [लड़की] जाति का बोध [ज्ञान] हो, उसे **'स्त्रीलिङ्ग'** कहते हैं; जैसे–छात्रा, बालिका, गौरी, नदी आदि।

↓ ↓

स्त्री जाति

[लड़की]

[क] नपुंसक + लिङ्ग → **नपुंसकलिङ्ग** – जिससे न तो 'पुरुष' जाति का बोध हो और नहि 'स्त्री' जाति का बोध हो, उसे **'नपुंसकलिङ्ग'** कहते हैं; जैसे-फल, गृह, पुष्प, नेत्र आदि।

पुरुष

'पुरुष' का अर्थ होता है–'व्यक्ति' ['त्व' अथवा 'ता']। 'व्यक्ति' किसी भी मनुष्य, जीव-जन्तु और पदार्थ [वस्तु] में रहनेवाला वह तत्त्व [गुण] है,

Scanned with CamScanner